अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय
सिद्धत्व-पर्यवसित जैन धर्म, दर्शन और साहित्य

मंगलमय णमोक्कार महामंत्र	१
जगत् का अनादि स्रोत	१
सत्य की खोज	२
भारतीय संस्कृति	३
वैदिक संस्कृति	४
श्रमण-संस्कृति	५
बौद्ध-संस्कृति	५
जैन-संस्कृति	६
संयम और आचार की महत्ता	७
जैनों का धर्म-प्रसार में औदासीन्य	८
जैन धर्म का अनादि स्रोत	८
पंच-महाव्रत : चातुर्याम धर्म	१०
भगवान् महावीर द्वारा तीर्थ-प्रवर्तन	१०
भगवान् महावीर द्वारा तपश्चरण और साधना	११
आगम का अर्थ	१२
आगमों की भाषा	१२
अर्द्धमागधी में भगवान् द्वारा धर्म-देशना	१३
आगमों की श्रवण-परम्परा	१५
आगमों का संकलन : प्रथम वाचना	१६
द्वितीय वाचना	१६
तृतीय वाचना	१७
आगमों का विस्तार	१७
चार अनुयोग	१८
चरणकरणानुयोग	१८
धर्मकथानुयोग	१९
गणितानुयोग	१९
द्रव्यानुयोग	१९
आगम-परिचय	१९
अंग-आगम	२०
आचारांग-सूत्र	२०
सूत्रकृतांग-सूत्र	२०
स्थानांग-सूत्र	२१
समवायांग-सूत्र	२१
व्याख्याप्रज्ञप्ति-सूत्र	२१
ज्ञातृधर्मकथा-सूत्र	२२
उपासकदशांग-सूत्र	२२
अन्तकृद्दशा-सूत्र	२२
अनुत्तरौपपातिक-सूत्र	२३
प्रश्नव्याकरण-सूत्र	२३
विपाक-सूत्र	२३
दृष्टिवाद	२३

उपांग-परिचय २४
औपपातिक-सूत्र २४
राजप्रश्नीय-सूत्र २५
जीवाजीवाभिगम-सूत्र २५
प्रज्ञापना-सूत्र २५
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-सूत्र २५
चंद्रप्रज्ञप्ति-सूत्र २६
सूर्यप्रज्ञप्ति-सूत्र २६
निरयावलिका-सूत्र २६
कल्पावतंसिका २६
पुष्पिका २६
पुष्पचूलिका २६
वृष्णिदशा २७
चार मूल-सूत्र २७
दशवैकालिक-सूत्र २७
उत्तराध्ययन-सूत्र २८
नंदी-सूत्र २८
अनुयोगद्वार-सूत्र २९
छेद-सूत्र २९
व्यवहार-सूत्र २९
बृहत्कल्प-सूत्र ३०
निशीथ-सूत्र ३०
दशाश्रुतस्कंध-सूत्र ३१
आवश्यक-सूत्र ३१
सामायिक ३२
चतुर्विंशतिस्तव ३२
वंदना ३२
प्रतिक्रमण ३२
कायोत्सर्ग ३३
प्रत्याख्यान ३३
आगमों पर व्याख्या-साहित्य ३३
निर्युक्ति ३४
भाष्य ३४
चूर्णि ३५
संस्कृत में टीकाएँ : वृत्तियाँ ३५
टब्बा ३६
लोकभाषाओं में विविध विधाओं में रचनाएँ ३६
दिगंबर-परंपरा का साहित्य ३७
षट्खंडागम की रचना ३८
षट्खंडागम : संक्षिप्त परिचय ३८
सिद्धांतचक्रवर्ती आचार्य नेमिचन्द्र ३९
आचार्य कुंदकुंद ३९
आगमोत्तरकालीन जैन साहित्य ३९
आचार्य उमास्वाति ३९
आचार्य समंतभद्र ४०
आचार्य सिद्धसेन ४०
आचार्य हरिभद्र ४०
आचार्य हेमचंद्र ४१
सार-संक्षेप ४१

३२
३२
३२
३२
३३
३३
३३
३४
३४
३५
३५
३६
३६
३७
३८
३८
३९
३९
३९
३९
४०
४०
४०
४१
४१

द्वितीय अध्याय
सिद्धपद और णमोक्कार आराधना

मंत्र-आम्नाय	४४
मंत्र की परिभाषा	४४
मंत्र और अंतश्चेतना	४६
णमोक्कार मंत्र में निर्विकल्प आस्था	४८
णमोक्कार मंत्र की शक्ति	४८
मंत्र : ध्वनि तरंग एवं प्रकाश	४९
ध्वनि की चामत्कारिकता	४९
मंत्र-जप : उपयोग	५१
मंत्राराधना के दो मार्ग : आध्यात्मिक और लौकिक	५२
मंत्र-रूप शब्दब्रह्म द्वारा परब्रह्म का साक्षात्कार	५२
णमोक्कार मंत्र की उत्पत्ति	५४
णमोक्कार मंत्र : जप-विधि	५५
द्रव्य-शुद्धि	५५
क्षेत्र-शुद्धि	५६
समय-शुद्धि	५६
आसन-शुद्धि	५६
विनय-शुद्धि	५७
मन-शुद्धि	५७
वचन-शुद्धि	५७
काय-शुद्धि	५८
जप के क्रम, भेद	५८
कमल-जाप्य	५८
हस्तांगुली-जाप्य	५९
माला-जाप्य	५९
णमोक्कार महामंत्र से ज्ञायक भाव का उदय	६२
णमोक्कार मंत्र : शांति का उद्भव	६३
णमोक्कार महामंत्र के आराधक जैन आराधना में	६५
णमोक्कार मंत्र का महत्त्व	६६
णमोक्कार मंत्र की उत्कृष्टता	६८
णमोक्कार मंत्र : लेश्या विशुद्धि का उपक्रम	७४
णमोक्कार से कृतज्ञता का विकास	७६
नवकार से नम्रता की प्रेरणा	७८
णमोक्कार की अमोघ शक्ति : विलक्षणता	८०
णमोक्कार मंत्र और लय-विज्ञान	८२

णमोक्कार मंत्र द्वारा नवतत्त्व का बोध	८५
नयवाद के परिप्रेक्ष्य में	
णमोक्कार का विश्लेषण	८६
नैगम नय	८७
संग्रह नय	८८
व्यवहार नय	८९
ऋजुसूत्र नय	८९
शब्द नय	८९
समभिरूढ़ नय	९०
एवंभूत नय	९०
शुद्ध नयानुसार आत्मा का स्वरूप	९२
अष्टांगयोग : नवकार महामंत्र परिशीलन	९४
यम	९४
नियम	९५
आसन	९६
प्राणायाम	९६
प्रत्याहार	९७
धारणा, ध्यान और समाधि	९७
णमोक्कार मंत्र में समग्र रसों का समावेश	९९
णमोक्कार मंत्र और	
रंग-विज्ञान का सामंजस्य	१०३
ललित कलाओं में	
नवकार का आध्यात्मिक लालित्य	१०८
णमोक्कार मंत्र का ध्यान और प्रभाव	११२
णमोक्कार मंत्र में मैत्री आदि	
भावना चतुष्टय का समन्वय	११४
णमोक्कार : सकाम निर्जरा का पथ	१२०
ज्योतिष-शास्त्र की दृष्टि से	
णमोक्कार मंत्र का मूल्यांकन	१२०
गणितशास्त्र के अनुसार	
णमोक्कार की महत्ता, परिपूर्णता	१२२
राजनैतिक दृष्टि से	
णमोक्कार मंत्र की सर्वोत्कृष्टता	१२६
अर्थशास्त्र के सिद्धान्तानुसार	
णमोक्कार की सर्वाधिक महत्ता	१२९
न्याय-तंत्र के संदर्भ में णमोक्कार मंत्र	१३२
वैधानिक दृष्टि से	
णमोक्कार मंत्र की अपरिवर्तनीयता	१३४
णमोक्कार मंगल-सूत्रों का	
आत्मा के साथ संबंध	१३६
णमोक्कार मंत्र : सुख का अनन्य हेतु	१३६
विकार-विजय में मंगलसूत्रों का सार्थक्य	१४१
णमोक्कार : परमात्म-साक्षात्कार का	
निर्बाध माध्यम	१४१
णमोक्कार की सर्व-सिद्धान्त-सम्मतता	१४५
सार-संक्षेप	१४७

तृतीय अध्याय
आगमों में सिद्धपद का विस्तार

आगम : आप्त-परंपरा	१५०
जीवन का परम साध्य : मोक्ष	१५०
आचारांग-सूत्र में सिद्ध का स्वरूप	१५२
सूत्रकृंताग-सूत्र में	
मोक्ष की महत्ता— सिद्धत्व की गरिमा	१५३
मोक्षाभिमुख साधक की भूमिका	१५४
मोक्ष प्राप्ति की सुलभता : दुर्लभता	१५७
मोक्ष-प्राप्त महापुरुष : उनका स्थान	१५८
स्थानांग-सूत्र में मोक्ष का अस्तित्त्व	१५९
सिद्ध-पद : वर्गणा	१५९
मुक्त-अमुक्त विश्लेषण	१६०
भव्य-सिद्धिक : अभव्य-सिद्धिक	१६१
सिद्धि की एकरूपता	१६२
द्विपदावतार-आख्यान	१६३
सिद्धगति की ओर क्रमशः प्रयाण	१६३
सिद्धायतन-कूट : स्पष्टीकरण	१६४
समवायांग-सूत्र में मोक्ष का विवेचन	१६६
भवसिद्धिक जीवों द्वारा सिद्धत्व-प्राप्ति	१६७
सिद्धत्व-पर्याय का प्रथम समय : गुण	१७०
भगवान् महावीर द्वारा सिद्धत्व-प्राप्ति	१७१
सिद्धत्व-परंपरा	१७१
प्रदेशावगाहना	१७३
सिद्ध गति : विरहकाल	१७४
व्याख्याप्रज्ञप्ति-सूत्र में	
णमोक्कार मंत्र : मंगलाचरण	१७४
णमो सिद्धाणं	१७५
सिद्ध-पद का निर्वचन	१७६
सिद्धत्व-प्राप्ति : शंका : समाधान	१७६
असंसार समापन्नक : सिद्ध	१७८
सिद्धजीव :	
वृद्धि-हानि-अवस्थिति-कालमान	१८०
सिद्धों का वृद्धि-क्रम	१८४
सिद्धों के सोपचयादि का निरूपण	१८५
सिद्ध जीवों की गति	१८५
सोच्चा-केवली और सिद्धत्व	१८७
सिद्धों का संहनन	१८९
भवसिद्धिक जीवों का सिद्धत्व	१९०
केवली तथा सिद्ध का ज्ञान	१९२
मोक्षसूचक स्वप्न	१९४
सिद्धों के प्रथमत्व-अप्रथमत्व की चर्चा	१९४
माकंदी पुत्र के सिद्धत्व विषयक प्रश्न	१९६
उपासकदशांग सूत्र में	
सिद्धत्व-प्राप्ति का संसूचन	१९७
अंतकृद्दशांग-सूत्र में	
सिद्धत्व-प्राप्ति के विलक्षण उदाहरण	१९७
गजसुकुमाल	१९७
अर्जुनमाली	१९८
प्रश्नव्याकरण-सूत्र में	

संवर-आराधना से मुक्ति	२००
औपपातिक-सूत्र में	
योग निरोध : सिद्धावस्था	२०१
सिद्धों का स्वरूप	२०२
सिद्धों के संहनन : संस्थान	२०२
सिद्धों का आवास	२०३
सिद्धों में साकार-अनाकार उपयोग	२०४
सिद्धों का सुख	२०५
राजप्रश्नीय-सूत्र में अर्हत्-सिद्ध-संस्तवन	२०६
जीवों के अभिगम का निरूपण	२०७
तीर्थ-सिद्ध	२०७
अतीर्थ-सिद्ध	२०८
तीर्थंकर-सिद्ध	२०८
अतीर्थंकर-सिद्ध	२०८
स्वयं-बुद्ध-सिद्ध	२०९
प्रत्येक-बुद्ध-सिद्ध	२०९
बुद्ध-बोधित-सिद्ध	२०९
स्त्री-लिंग-सिद्ध	२०९
पुरुष-लिंग-सिद्ध	२०९
नपुंसक-लिंग-सिद्ध	२०९
स्व-लिंग-सिद्ध	२०९
अन्य-लिंग-सिद्ध	२०९
गृहस्थ-लिंग-सिद्ध	२१०
एक-सिद्ध	२१०
अनेक-सिद्ध	२१०
सिद्ध एवं असिद्ध	२११
प्रज्ञापना-सूत्र में	
चरम-अचरम जीव : अल्प-बहुत्व	२१२
सिद्ध जीवों के उपपात का व्यवधान	२१४
सिद्ध तथा औदारिक शरीर	२१५
सिद्धत्व का काल	२१५
सिद्ध-दृष्टि	२१५
सिद्धों का अनाहारकत्व	२१६
सिद्धत्व, संज्ञित्व, असंज्ञित्व	२१७
सूर्यप्रज्ञप्ति-सूत्र में पंच-पद वंदन	२१८
उत्तराध्ययन-सूत्र में	
सिद्ध-श्रेणी— क्षपक-श्रेणी	२१९
प्रमाद और अप्रमाद की व्याख्या	२१९
ब्रह्मचर्य और सिद्धत्व	२२०
जिन शासन : मुक्ति का मार्ग	२२१
सिद्ध-नमन	२२२
क्षेमंकर एवं शिवमय स्थान	२२२
कायोत्सर्ग : सिद्ध-संस्तवन	२२३
मोक्ष-मार्ग-प्ररूपणा	२२५
योगनिरोध द्वारा सिद्धत्व की ओर गति	२२५
तप से विप्रमोक्ष	२२६
सर्व-दुःख-विमुक्ति का पथ	२२७
समस्त कर्मों और दुःखों से	
छूटने का क्रम	२२७
सिद्धिगत जीवों का विशेष निरूपण	२२८
दशवैकालिक-सूत्र में आत्म-शुद्धि	
का चरम विकास : सिद्धत्व	२२९
प्रतिस्रोत : मुक्ति का मार्ग	२३२
भगवान् महावीर द्वारा	
सिद्धत्व प्राप्ति की रात्रि	२३३
सार-संक्षेप	२३४

चतुर्थ अध्याय
उत्तरवर्ती जैन ग्रन्थों में सिद्ध-पद का निरूपण

णमोक्कार-विवेचन	२३६
णमो अरिहंताणं	२३६
णमो सिद्धाणं	२३९
णमो आयरियाणं	२४०
णमो उवज्झायाणं	२४१
णमो लोए सव्वसाहूणं	२४२
सिद्ध-पद का विश्लेषण	२४४
प्राकृत रचनाओं में सिद्ध-पद	२४५
सिद्ध शब्द की व्युत्पत्ति	२४५
आवश्यक-निर्युक्ति में सिद्ध-पद	२४६
नाम-निक्षेप	२४७
स्थापना-निक्षेप	२४७
द्रव्य-निक्षेप, भाव-निक्षेप	२४७
तप-सिद्ध और कर्म-क्षय-सिद्ध के लक्षण	२४९
सिद्धत्व-आराधना के संदर्भ में रत्नत्रय का निरूपण	२५०
सिद्धत्व-प्राप्ति का विश्लेषण	२५२
रत्नत्रयरूप आत्मभाव : सिद्धत्व की भूमिका	२५२
सिद्धों के गुण	२५४
श्री सिद्धिचंद्रगणीकृत व्याख्या	२५५
श्री हर्षकीर्ति सूरि द्वारा सिद्ध-पद का निरूपण	२५५
संस्कृत में जैन मनीषियों द्वारा ग्रंथ-रचना	२५५
तत्त्वार्थ-सूत्र में सिद्ध की व्याख्या	२५७
सिद्धत्वोन्मुख ऊर्ध्वगमन : हेतु	२५७
सिद्धों की विशेषताएं	२५८
क्षेत्र	२५९
काल	२५९
गति	२५९
लिंग	२५९
तीर्थ	२५९
चारित्र	२५९
प्रत्येकबुद्ध-बोधित	२६०
ज्ञान	२६०
अवगाहना	२६०
अंतर	२६०
संख्या	२६०
अल्प-बहुत्व	२६१
तत्त्वार्थ-राजवार्तिक में मोक्ष-मार्ग	२६१
मुक्त पुरुषों का अनाकार है : अभाव नहीं	२६३
सिद्धों का अव्यय, अविनश्वर सुख	२६४
प्रशमरति प्रकरण में सिद्ध-पद का निरूपण	२६५
रत्नत्रय द्वारा मोक्ष की सिद्धि	२६५
सिद्धत्व-प्राप्ति का क्रम	२६६
सिद्ध-पद का विश्लेषण	२६८

धवला में मंगलाचरण : सिद्ध-नमन	२६९
सिद्धत्व— आत्म-विकास का चरम प्रकर्ष	२६९
सिद्धभक्त्यादि संग्रह में सिद्ध-स्वरूप	२७०
सिद्धत्व-प्रतिष्ठा का चित्रण	२७३
तत्त्वानुशासन में	
सिद्धों के ध्यान का निर्देश	२७४
सिद्धों के ध्यान का फल	२७५
अर्हम् एवं सिद्ध-चक्र का विवेचन	२७६
सिद्धत्व की साधना में	
कषाय-विजय का स्थान	२७७
योगशास्त्र में कषाय-विजय का मार्ग	२७७
परमात्म-भाव के साक्षात्कार में	
मनोजय का स्थान	२७९
परमात्म-भाव और रत्नत्रय	२८०
द्व्याश्रय महाकाव्य में	
सिद्ध-चक्र का उल्लेख	२८०
त्रिषष्ठि-शलाका-पुरुष-चरित में	
सिद्ध-नमन	२८१
श्री हरिविक्रमचरित में सिद्ध-प्रणमन	२८२
बहिरात्म-अन्तरात्म-परमात्म-भाव	२८२
बहिरात्म-भाव	२८३
अंतरात्म-भाव	२८३
परमात्म-भाव	२८३
ज्ञानार्णव में सिद्ध-पद का वर्णन	२८४
मोक्ष का लक्षण : स्वरूप	२८५
सिद्ध-पद की गरिमा	२८६
तत्त्वार्थसार दीपक में सिद्ध-विवेचन	२८९
ॐ नमः सिद्धम् मंत्र	२९३
आचार-दिनकर-संदर्भ में सिद्ध-स्तुति	२९४
साम्य का मोक्ष रूप फल	२९४
महाप्रभाविक नवस्मरण में सिद्ध-पद	२९५
सिद्ध भगवान् के आठ गुण	२९५
अनंत ज्ञान	२९५
अनंत दर्शन	२९६
अव्याबाध सुख	२९६
अनंत चारित्र	२९६
अक्षय स्थिति	२९६
अमूर्त्तता	२९६
अगुरु-लघु	२९६
अनंत वीर्य	२९६
ज्ञानावरणीय-कर्म	२९८
दर्शनावरणीय-कर्म	२९८
वेदनीय-कर्म	२९८
मोहनीय-कर्म	२९८
आयुष्य-कर्म	२९८
नाम-कर्म	२९९
गोत्र-कर्म	२९९
अंतराय-कर्म	२९९
घाति-अघाति-कर्म	२९९
पंच-परमेष्ठी-स्तवन में सिद्ध-पद	३००
अरिहंत भक्ति :	
सिद्धत्व-प्राप्ति का पथ	३००
सिद्धों की सिद्ध-साध्यता	३००
सार-संक्षेप	३०१

पंचम अध्याय
सिद्धत्व-पथ : गुणस्थानमूलक सोपान क्रम

परमलक्ष्योन्मुखी उपक्रम	३०३
गुणस्थान का स्वरूप	३०४
गुणस्थान का विस्तार	३०४
आधार	३०५
मिथ्या दृष्टि गुणस्थान	३०६
ग्रंथी-भेद	३०६
अपूर्वकरण	३०६
स्वर्णिम-वेला	३०७
सम्यक्त्व का व्यावहारिक पक्ष	३०८
गुरु का वैशिष्ट्य	३०९
मिथ्यात्व के दस भंग	३०९
सम्यक्त्व के दस भंग	३१०
सम्यक्त्व के विविध पक्ष	३१०
श्रद्धान	३११
लिंग	३११
विनय	३११
स्थविर-विनय	३१२
कुल-विनय	३१३
गण-विनय	३१३
संघ-विनय	३१३
स्वधर्मी-विनय	३१३
क्रियावान्-विनय	३१३
शुद्धि	३१३
दूषण-त्याग	३१४
शंका	३१४
कांक्षा	३१४
विचिकित्सा	३१४
प्रभावना	३१४
कवित्व-प्रभावना	३१५
सम्यक्त्व के भूषण	३१६
जिन शासन में कुशलता	३१६
प्रभावना	३१६
तीर्थ-सेवा	३१६
स्थिरता	३१७
भक्ति	३१७
सम्यक्त्व के पाँच लक्षण	३१७
शम	३१७
संवेग	३१७
निर्वेद	३१७
अनुकंपा	३१७
आस्तिक्य— आस्था	३१८
यतना के छः रूप	३१९
वंदना	३१९
नमस्कार	३१९
आलाप	३१९
संलाप	३१९

दान ३२०
मान ३२०
छः आगार ३२१
राज्याभियोग ३२१
गणाभियोग ३२१
बलाभियोग ३२२
सुराभियोग ३२२
वृत्तिकांतार ३२२
गुरुनिग्रह ३२२
वंदना ३२२
सम्यक्त्व की छः भावनाएं ३२३
मूल-भावना ३२४
द्वार-भावना ३२४
प्रतिष्ठा-भावना ३२४
आधार-भावना ३२५
भाजन-भावना ३२५
निधि-भावना ३२५
सम्यक्त्व के स्थान ३२६
सम्यक्-दृष्टि : मोक्षानुगामी आयाम ३२८
सम्यक्त्व और सम्यक् दर्शन ३२९
सास्वादन-सम्यक्-दृष्टि गुणस्थान ३३०
मिश्र-गुणस्थान ३३१
अविरत-सम्यक्-दृष्टि गुणस्थान ३३२
देश-विरति गुणस्थान ३३२
प्रमत्त-संयत : सर्वविरति गुणस्थान ३३३
अप्रमत्त-संयत गुणस्थान ३३४
निवृत्ति-बादर गुणस्थान ३३५
उपशम श्रेणी तथा क्षपक श्रेणी ३३५
अनिवृत्ति-बादर गुणस्थान ३३६
सूक्ष्म-संपराय गुणस्थान ३३६
उपशांत-मोह गुणस्थान ३३६
क्षीण-मोह गुणस्थान ३३७
सयोग केवली गुणस्थान ३३७
अयोग केवली गुणस्थान ३३७
गुणस्थानों का कालमान ३३८
आत्मा की तीन अवस्थाएं ३३८
योगवासिष्ठ में
आध्यात्मिक विकास पर चिंतन ३४०
चौदह भूमियाँ ३४१
सात ज्ञान भूमियों का विस्तार ३४१
शुभेच्छा ३४१
विचारणा ३४१
तनुमानसा ३४२
सत्त्वापत्ति ३४२
असंसक्ति ३४२
पदार्थभावनी ३४२
तुर्यगा ३४२
पातंजल योग-दर्शन : चित्त-भूमियाँ ३४४
क्षिप्त ३४४
मूढ़ ३४४
विक्षिप्त ३४४
एकाग्र ३४५
निरुद्ध ३४५
अविद्या और विवेकख्याति ३४७
सप्तविध प्रज्ञाएं ३४७
बौद्ध धर्म के तीन यान ३४९

श्रावकयान	३४९
बोधिसत्त्व-यान	३४९
श्रावकयान की साधना : विकास	३५०
पृथक्जन	३५०
स्रोतापन्न	३५०
बुद्धानुस्मृति	३५१
धर्मानुस्मृति	३५१
संघानुस्मृति	३५१
शीलानुस्मृति	३५१
सकृदागामी	३५१
अनागामी	३५२
अर्हत्	३५२
महायान : बोधिसत्त्व-यान	३५२
सार-संक्षेप	३५३

षष्ठ अध्याय
जैन-योग पद्धति द्वारा सिद्धत्व की साधना

साधना के क्षेत्र में योग का स्थान	३५५
योगमूलक जैन साहित्य	३५६
योग का आरंभ : पूर्व-सेवा	३५७
गुरुजन-सेवा	३५७
दानशीलता	३५८
सदाचार	३५९
मोक्ष में अद्वेष	३५९
असदनुष्ठान वर्जन	३६०
अनुष्ठान के भेद	३६१
विष-अनुष्ठान के भेद	३६१
गर-अनुष्ठान के भेद	३६१
अननुष्ठान	३६२
तद्हेतु-अनुष्ठान	३६२
अमृत-अनुष्ठान	३६२
योग के भेद	३६४
इच्छा-योग	३६४
शास्त्र-योग	३६५
सामर्थ्य-योग	३६६
सामर्थ्य-योग के भेद	३६७
योगों की अयोगावस्था	३६८
दृष्टि और उसके भेद	३६९
ओघ-दृष्टि	३७०
योग-दृष्टि	३७१
सापाय-निरुपाय	३७२
मित्रादृष्टि	३७३
योगबीज	३७४
भावयोगियों का महत्त्व	३७५
बीज-श्रुति का फल	३७७
भाव-मल का क्षय और उसके लक्षण	३७७
अवंचक के तीन भेद	३७७
यथाप्रवृत्तिकरण एवं अपूर्वकरण	३७८
तारादृष्टि	३७८

बलादृष्टि	३८२
आसन-स्थान	३८२
स्थान के भेद	३८२
ऊर्ध्व स्थान	३८३
निषीदन-स्थान	३८३
शयन-स्थान	३८३
योगशास्त्र में आसनों का निरूपण	३८३
योगसूत्र में आसन : परिभाषा एवं सिद्धि	३८४
गीता में आसनों की चर्चा	३८५
हठयोग में आसनों का विस्तार	३८५
गीता में राजयोग का निरूपण	३८६
बलादृष्टि की विशेषताएं	३८७
दीप्रादृष्टि	३८८
प्राणायाम का स्वरूप	३८८
प्राणायाम के प्रकार	३८९
योग-सूत्र में प्राणायाम	३८९
दीप्रादृष्टि की विशेषताएं	३८९
स्थिरादृष्टि	३८९
प्रत्याहार का लक्षण	३९०
प्रत्याहार और प्रतिसंलीनता का समन्वय	३९०
कांतादृष्टि	३९०
धारणा का लक्षण	३९१
कांतादृष्टि की विशेषताएं	३९१
अनासक्त कर्मयोग के साथ समन्वय	३९१
प्रभादृष्टि	३९१
योगसूत्र में ध्यान	३९२
परादृष्टि	३९२
योगसूत्र में समाधि	३९२
परादृष्टि की विशेषताएं	३९३
परम निर्वाण : सिद्धत्व-प्राप्ति	३९३
मुक्त-तत्त्व-मीमांसा	३९४
योगविंशिका में योग का विवेचन	३९४
योगसिद्धि	३९६
योगियों के भेद	३९७
कुलयोगी	३९८
कुलयोगियों की विशेषता	३९८
गोत्रयोगी	३९८
प्रवृत्तचक्र-योगी	३९९
योगदृष्टि समुच्चय की उपयोगिता	४०१
सत्-तत्त्वाभिरुचि का वैशिष्ट्य	४०२
सहजाभिरुचि	४०२
ध्यान का विश्लेषण	४०३
योगशास्त्र में ध्यान	४०३
ध्यान की योग्यता	४०४
ध्येय का स्वरूप	४०४
पिंडस्थ ध्यान एवं धारणाएं	४०४
पार्थिवी धारणा	४०५
आग्नेयी धारणा	४०५

वायवी धारणा	४०६
वारुणी धारणा	४०६
तत्त्वभू धारणा	४०७
पदस्थ ध्यान	४०७
रूपस्थ ध्यान	४०८
रूपस्थ ध्यान का परिणाम	४०८
रूपातीत ध्यान	४०९
ध्यान का क्रम	४०९
मनोजय के संदर्भ में अनुभूतिमूलक निरूपण	४१०
विक्षिप्त एवं यातायात मन	४१०
श्लिष्ट तथा सुलीन मन	४११
शुक्ल-ध्यान : उत्कर्ष : भेद	४१२
पृथक्त्व-श्रुत-सविचार	४१२
एकत्व-श्रुत-अविचार	४१३
सूक्ष्म-क्रिया-अप्रतिपाति	४१३
समुच्छिन्न-क्रिया-अप्रतिपाति	४१३
केवली के साथ ध्यान का संबंध	४१३
अयोगी के साथ ध्यान का संबंध	४१४
शुक्ल-ध्यान की फल-निष्पत्ति	४१४
केवली की उत्तर क्रिया और समुद्घात	४१५
समुद्घात का विधि-क्रम	४१५
योगों का सर्वथा निरोध	४१६
सार-संक्षेप	४१८

सप्तम अध्याय
सिद्धत्वोपलब्धि, ब्रह्मसाक्षात्कार एवं परिनिर्वाण

जीवन का चरम साध्य	४२०
शुद्धोपयोग से सिद्धत्व	४२१
शुद्धात्मा की अबद्धावस्था	४२३
ज्ञानावरणादि का अभाव : सिद्धत्व का सद्भाव	४२४
सिद्धत्व का निरुपाधि ज्ञान, दर्शन और सुख	४२५
शुद्ध भाव की आराधना	४२६
सिद्धों का वैशिष्ट्य	४२८
सिद्ध एवं ब्रह्म : तुलना-समीक्षा	४२९
जैन श्रुत-परम्परा की अनादिता	४२९
वेदों की अपौरुषेयता	४२९
ब्रह्म का स्वरूप	४३१
लीलाकैवल्य का स्पष्टीकरण	४३६
स्वरूपावबोध : ब्रह्मसाक्षात्कार	४३८
जीवन्मुक्ति : विदेहमुक्ति	४३८

मनोलय— ब्रह्मप्राप्ति ४४०
परमपद के सोपान ४४१
प्रणव ४४१
स्वरूपज्ञान ४४१
स्वत्वानुभूति ४४२
वैराग्य, तत्त्वज्ञान एवं समाधि ४४३
निर्मलज्ञान ४४४
विवेक चूड़ामणि में
ब्रह्मज्ञान का मार्गदर्शन ४४५
मुक्ति हेतु शिष्य की पृच्छा ४४६
गुरु द्वारा समाधान ४४६
अपरोक्षानुभूति से मुक्ति ४४८
अज्ञान का नाश : परमात्मानुभूति ४४९
आत्मज्ञान— मुक्ति का उपाय ४४९
ब्रह्मसाक्षात्कार का प्रशस्त-पथ ४५०
आत्मनिष्ठा एवं विमुक्ति ४५०
समाधि द्वारा अद्वैत स्वरूपानुभूति ४५१
चित्त का चैतन्य स्वरूप में अवस्थापन ४५२
अवधूत गीता में
ब्रह्मानुभूति का विवेचन ४५३
अवधूत एवं धूत : विश्लेषण ४५४
परात्मभावानुभूति ४५५
आत्मकर्तव्य बोध ४५६
परमात्मभाव— अदेहावस्था ४५६
बौद्ध दर्शन में निर्वाण का स्वरूप ४६२
निर्गुणमार्गी संत-परंपरा में
परमात्मोपासना का मार्ग ४६७
सूफी-परंपरा ४६८
जैन साधना पद्धति में
प्रेम का सामंजस्य ४६९
सार-संक्षेप ४७१

उपसंहार : उपलब्धि : निष्कर्ष

मृगमरीचिका में विभ्रान्त मानव ४७२
साधना का निर्भ्रान्त पथ ४७२
सिद्धों का परमोपकार ४७३
सिद्धों को नमन ४७४
सार-संक्षेप ४७५
अज्ञान-ज्ञान-विज्ञान ४८७
एक ज्वलंत प्रश्न ४८९
सार्वजनीन धर्म ४९१
अधिकार और कर्तव्य का समन्वय ४९१
निष्कर्ष ४९३

परिशिष्ट : प्रयुक्त ग्रन्थ सूची

(पृष्ठ : ४९५ से ५२१)